unacademy

प्रगतिवाद युग

unacademy

प्रगतिवाद युग की समय सीमा व आरम्भ -: हिंदी साहित्य में 1936 से प्रगतिवादी युग का प्रारम्भ माना जाता है और 1942 इसका अंत होता है। इस प्रकार हिंदी साहित्य में प्रगतिवाद युग की अवधि 1936 से 1942 तक रही।

unacademy

प्रगतिवाद

प्रगतिवाद एक राजनैतिक एवं सामाजिक शब्द है। 'प्रगति शब्द का अर्थ है 'आगे बढ़ना, उन्नति। प्रगतिवाद का अर्थ है "समाज, साहित्य आदि की निरन्तर उन्नति पर जोर देने का सिद्धांत।' प्रगतिवाद छायावादोत्तर युग के नवीन काव्यधारा का एक भाग हैं।

यह उन विचारधाराओं एवं आन्दोलनों के सन्दर्भ में प्रयुक्त किया जाता है जो आर्थिक एवं सामाजिक नीतियों में परिवर्तन या सुधार के पक्षधर हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से अमेरिका में प्रगतिवाद २०वीं शती के आरम्भ में अपने शीर्ष पर था जब गृह-युद्ध समाप्त हुआ और बहुत तेजी से औद्योगीकरण आरम्भ हुआ।

unacademy

प्रगतिवाद का जन्म

प्रगतिवाद (1936 ई०से...): संगठित रूप में हिन्दी में प्रगतिवाद का आरंभ 'प्रगतिशील लेखक संघ' द्वारा 1936 ई० में लखनऊ में आयोजित उस अधिवेशन से होता है जिसकी अध्यक्षता प्रेमचंद ने की थी। इसमें उन्होंने कहा था, 'साहित्य का उद्देश्य दबे-कुचले हुए वर्ग की मुक्ति का होना चाहिए।'

1935 ई० में इ० एम० फोस्टर ने प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन नामक एक संस्था की नींव पेरिस में रखी थी। इसी की देखा देखी सज्जाद जहीर और मुल्क राज आनंद ने भारत में 1936 ई० में प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना की।

unacademy

प्रगतिवादी काव्य धारा का समय (समय-सीमा) 1936 से 1943 ई. तक माना गया है। सन् 1934 ई. में गोर्की के नेतृत्व में रूस में 'सोवियत लेखक संघ' की स्थापना हुई। यह विश्व का पहला लेखक संगठन था। सन् 1935 ई. में हेनरी बारबूस की पहल पर पेरिस में एक अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ फारेस्टर जिसके अध्यक्ष थे। ई. एम. फारेस्टर ने ही 1935 ई. में 'प्रगतिशील लेखक संघ' (Progressive Writer's Association) की स्थापना की। इसी वर्ष मुल्कराज आनन्द, सज्जाद जहीर, ज्योति घोष, के. एम. भट्ट, हीरेन मुखजी, एस. सिन्हा और मोहम्मद्दीन तासीन ने भारत की तरफ से सर्वप्रथम इंग्लैण्ड (जुलाई 1935 ई.) में 'भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ' का गठन किया।

भारत में प्रगतिवाद का पहला अधिवेशन 1936 ई. में लखनऊ में हुआ, जिसके प्रथम अध्यक्ष/ सभापति प्रेमचंद थे। इस अधिवेशन के समय से हिन्दी में प्रगतिवादी आन्दोलन की शुरुआत और स्थापना होती है। दूसरे अधिवेशन का सभापतित्व रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने किया था।

unacademy

प्रगतिवाद का अर्थ:

प्रगतिवाद (pragativad) का सैद्धान्तिक आधार मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद हैं। राजनीतिक क्षेत्र में जो समाजवाद या साम्यवाद है, साहित्य के क्षेत्र में वही प्रगतिवाद है। प्रगतिवाद शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1942 ई. में मुक्तिबोध ने अपने एक लेख 'प्रगतिवाद- एक दृष्टि आगामी कल' में किया था।

शिवदान सिंह चौहान का 1937 ई. में विशाल भारत में एक लेख 'प्रगतिशील साहित्य की आवश्यकता' प्रकाशित हुआ था। प्रगतिशील साहित्य का नारा 'कला संसार को बदलने के लिए' था। शिवदान सिंह चौहान ने लिखा है कि, ' हमारा साहित्यिक नारा कला कला के लिए नहीं, वरन कला संसार को बदलने के लिए है। इस नारे को बुलंद करना प्रत्येक प्रगतिशील साहित्य का फर्ज है।'

unacademy

प्रगतिवाद की आन्दोलन के रूप में शुरूआत 1936 ई. से मानी जाती है जो कविता में सामाजिक यथार्थवाद को लेकर आगे बढ़ा। नामवर सिंह ने लिखा है- 'जिस तरह कल्पना प्रवण अंतदृष्टि छायावाद की विशेषता है और अंतर्मुखी बौद्धिक दृष्टि प्रयोगवाद की, उसी तरह सामाजिक यथार्थ दृष्टि प्रगतिवाद की विशेषता है।'

सुमित्रानंदन पंत का काव्य संग्रह युगवाणी 'प्रगतिवाद' का प्रथम काव्य संग्रह माना जाता है। पंत को ही प्रगतिवाद के जनक माना जाता है। डॉ. बच्चन सिंह ने भी सुमित्रानन्दन पंत कृत 'युगवाणी' को खडी बोली का प्रथम प्रगतिवादी (pragativadi) काव्य माना है। वहीं डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने कालक्रम की दृष्टि से रामेश्वर 'करुण' कृत ब्रजभाषा काव्य 'करुण सतसई' को प्रथम प्रगतिवादी कवि और काव्य माना है।

unacademy

मुख्य तथ्य

- एक साहित्यिक आंदोलन के रूप में प्रगतिवाद का इतिहास मोटे तौर पर 1936 ई० से लेकर 1956 ई० तक का इतिहास है,
- जिसके प्रमुख कवि हैं—केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, राम विलास शर्मा, रांगेय राघव, शिव मंगल सिंह 'सुमन', त्रिलोचन आदि।
- किन्तु व्यापक अर्थ में प्रगतिवाद न तो स्थिर मतवाद है और न ही स्थिर काव्य रूप बल्कि यह निरंतर विकासशील साहित्य धारा है।
- प्रगतिवाद के विकास में अपना योगदान देनेवाले परवर्ती कवियों में केदारनाथ सिंह, धूमिल, कुमार विमल, अरूण कमल, राजेश जोशी आदि के नाम उल्लेखनीय है।

unacademy

प्रगतिवादी काव्य का मूलाधार मार्क्सवादी दर्शन है पर यह मार्क्सवाद का साहित्यिक रूपांतर मात्र नहीं है। प्रगतिवादी आंदोलन की पहचान जीवन और जगत के प्रति नये द्रष्टिकोण में निहित है। यह नया दृष्टिकोण था :-

- पुराने रूढ़िबद्ध जीवन-मूल्यों का त्याग;
- आध्यात्मिक व रहस्यात्मक अवधारणाओं के स्थान पर लोक आधारित अवधारणाओं को मानना;
- हर तरह के शोषण और दमन का विरोध;
- धर्म, लिंग, नस्ल, भाषा, क्षेत्र पर आधृत गैर-बराबरी का विरोध;
- स्वतंत्रता, समानता तथा लोकतंत्र में विश्वास;
- परिवर्तन व प्रगति में विश्वास मेहनतकश लोगों के प्रति गहरी सहानुभूति;
- नारी पर हर तरह के अत्याचार का विरोध;
- साहित्य का लक्ष्य सामाजिकता में मानना आदि।

unacademy

प्रवृत्तियाँ

- प्रगतिवाद वैसी साहित्यिक प्रवृत्ति है जिसमें एक प्रकार की इतिहास चेतना, सामाजिक यथार्थ दृष्टि, वर्ग चेतन विचारधारा, प्रतिबद्धता या पक्षधरता, गहरी जीवनासक्ति, परिवर्तन के लिए सजगता और एक प्रकार की भविष्योन्मुखी दृष्टि मौजूद हो।
- प्रगतिवादी काव्य एक सीधी-सहज-तेज प्रखर, कभी व्यंग्यपूर्ण आक्रामक काव्य-शैली का वाचक है।

प्रगतिवाद साहित्य को सोद्देश्य मानता है और उसका उद्देश्य है 'जनता के लिए जनता का चित्रण करना' दूसरे शब्दो में, वह कला 'कला के लिए' के सिद्धांत में यकीन नहीं करता बल्कि उसका यकीन तो 'कला जीवन के लिए' के फलसफे में है। मतलब कि प्रगतिवाद आनंदवादी मूल्यों के बजाय भौतिक उपयोगितावादी मूल्यों में विश्वास करता है।

- राजनीति में जो स्थान 'समाजवाद' का है वही स्थान साहित्य में 'प्रगतिवाद' का है।

unacademy

प्रगतिवादी काव्य की विशेषताएं

- समाजवादी यथार्थवाद/सामाजिक यथार्थ का चित्रण,
- प्रकृति के प्रति लगाव
- नारी प्रेम
- राष्ट्रीयता
- सांप्रदायिकता का विरोध
- बोधगम्य भाषा (जनता की भाषा में जनता की बातें) व व्यंग्यात्मकता
- मुक्त छंद का प्रयोग (मुक्त छंद का आधार कजरी, लावनी, ठुमरी जैसे लोक गीत)
- मुक्तक काव्य रूप का प्रयोग।

unacademy

छायावाद व प्रगतिवाद में अंतर

- छायावाद में कविता करने का उद्देश्य 'स्वान्तः सुखाय' है जबकि प्रगतिवाद में 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' है।
- छायावाद में वैयक्तिक भावना प्रबल है जबकि प्रगतिवाद में सामाजिक भावना।
- छायावाद में अतिशय कल्पनाशीलता है जबकि प्रगतिवाद में ठोस यथार्थ।

unacademy

छायावादोत्तर युग की नवीन काव्यधारा

- प्रगतिवादी काव्यधारा – केदारनाथ अग्रवाल, राम विलास शर्मा, नागार्जुन, रांगेय राघव, शिवमंगल सिंह 'सुमन', त्रिलोचन आदि।
- प्रयोगवादी काव्य धारा – अज्ञेय, गिरिजा कुमार माथुर, मुक्तिबोध, भवानी प्रसाद मिश्र,
- नयी कविता काव्य धारा – शमशेर बहादुर सिंह, धर्मवीर भारती आदि।
- नवगीत– शंभुनाथ सिंह, रामदरश मिश्र, कुँवर बेचैन, अनुप अशेष, देवेद्र शर्मा 'इंद्र' आदि।

unacademy

प्रमुख प्रगतिवादी कवि और उनकी रचनाएँ

प्रगतिवादी कवियों को तीन श्रेणियों में रखा जा सकता हैं- 1. पूर्ववर्ती काव्यधारा छायावाद से संबद्ध कवि, 2. मूल रूप से प्रगतिवादी कवि और 3. वे जिन्होंने प्रगतिवादी कविता से अपनी काव्य-यात्रा शुरु की लेकिन बाद में प्रयोगवादी या नई कविता करने लगे।

पहले वर्ग के कवियों में सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', नरेन्द्र शर्मा, भगवती चरण वर्मा, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', बच्चन की कुछ कविताएं बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', माखन लाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर', उदयशंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिंद' आदि। इन कवियों का प्रगतिवादी साहित्य में उल्लेखनीय योगदान है।

unacademy

दूसरे वर्ग- मूल रूप से प्रगतिवादी कवियों में केदारनाथ अग्रवाल, रामविलास शर्मा, नागार्जुन, रांगेय राघव, शिवमंगल सिंह 'सुमन' तथा त्रिलोचन का नाम उल्लेखनीय है।

तीसरे वर्ग- गजानन माधव 'मुक्तिबोध', अज्ञेय, भारत भूषण अग्रवाल, भवानी प्रसाद मिश्र, नरेश मेहता, शमशेर बहादुर सिंह, धर्मवीर भारती के यहाँ भी प्रगतिवाद किसी न किसी रूप में मौजूद है, पर इन्हें प्रयोगवादी या नयी कविता का कवि माना जाता है।

यहां पर प्रमुख प्रगतिवादी कवियों और उनकी रचनाओं की सूची दी जा रही है-

unacademy

प्रगतिवाद के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ:

कवि	रचनाएँ
केदारनाथ अग्रवाल	1. युग की गंगा (1947), 2. नींद के बादल (1947), 3. लोक और आलोक (1957), 4. फूल नहीं रंग बोलते हैं (1965), 5. आग का आईना (1970), 6. समय-समय पर (1970), 7. गुलमेंहदी (1978), 8. पंख और पतवार (1979), 9. बंबई का रक्त स्नान (1981), 10. हे मेरी तुम! (1981), 11. मार प्यार की थापें (1981), 12. कहें केदार खरी-खरी (1983), 13. अपूर्वा (1984), 14. जमुन जल तुम (1984), 15. बोले बोल अबोल (1985), 16. जो शिलाएँ तोड़ते हैं (1985), 17. आत्मगंध (1988), 18. अनहारी हरियाली (1990), 19. खुली आँखें: खुले डैने (1993), 20. पुष्पदीप (1994), 21. बसंत में हुई प्रसन्न पृथ्वी (1996), 22. पुष्प दीप और बंबई का रक्त स्नान (आल्हा), 23. कुहकी कोयल, 24. खड़े पेड़ की देह

unacademy

राम विलास शर्मा	1.रूप-तरंग, 2. बुद्ध वैराग्य तथा प्रारम्भिक कविताएँ (1997) 3. सदियों के सोये जाग उठे (कविता, 1998)
नागार्जुन	1. युगधारा (1956), 2. सतरंगे पंखों वाली (1959), 3 . प्यासी पथराई आँखें (1962), 4. भस्मांकर (खंडकाव्य, 1971), 5. तालाब की मछलियाँ (1975), 6. खिचड़ी विप्लव देखा हमने (1980), 7. तुमने कहा था (1980), 8. हजार-हजार बाँहों वाली (1981), 9. पुरानी जूतियों का कोरस (1983), 10. रत्नगर्भ (1984), 11. ऐसे भी हम क्या! ऐसे भी तुम क्या!! (1984), 12. आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने (1986), 13. इस गुब्बारे की छाया में (1990), 14. भूल जाओ पुराने सपने (1994), 15. अपने खेत में (1997), 16. भूमिजा (प्रबंध काव्य)

unacademy

रांगेय-राघव	1. अजेय खण्डहर (1944), 2. मेधावी (1947), 3. पांचाली (1955), 4. राह का दीपक, 5. पिघलते पत्थर (1946)
शिव-मंगल सिंह सुमन	1. हिल्लोल (1939), 2. जीवन के गान (1942), 3. युग का मोल (1945), 4. प्रलय सृजन (1950), 5. विश्वास बदलता ही गया (1948), 6. विध्य हिमालय (1960), 7. मिट्टी की बारात (1972), 8. वाणी की व्यथा (1980), 9. कटे अँगूठों की वंदनवारें (1991), 10. पर आंख नहीं भरी, 11. हम पक्षी उन्मुक्त गगन के, 12. एशिया जाग उठा है, 13. नवयुग के गान
त्रिलोचन	1. धरती (1945), 2. गुलाब और बुलबुल (1956), 3. दिगंत (सानेट, 1957), 4. ताप के ताए हुए दिन (1980), 5. शब्द (1980), 6. उस जनपद का कवि हूँ (1981), 7. अरघान (1984), 8. तुम्हें सौंपता हूँ (1985), 9. फूल नाम है एक (1985), 10. अनकहनी भी कुछ कहनी है (1986), 11. मेरा घर, 12. चैती, 13. जीने की कला (2004), 14. गीत-गंगा, 15. सब का अपना है आकाश

unacademy

प्रगतिवाद के प्रमुख कवि और उनकी रचनाओं के बारे में महत्वपूर्ण तथ्य:

1. केदारनाथ अग्रवाल (1911-2000):

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म 1911 ई. में कमासिन, बादा में हुआ था और मृत्यु 2000 ई. में हुआ। केदारनाथ जी के माता-पिता का नाम क्रमशः हनुमानप्रसाद तथा घिसट्टो था और पत्नी का नाम पार्वती था।

केदारनाथ अग्रवाल आरम्भिक दौर में 'बालेन्द' उपनाम से ब्रजभाषा में कवित्त, सवैया छंद में लिखते थे। इनका प्रथम काव्य-संग्रह 'युग की गंगा' है। केदारनाथ अग्रवाल ने देश-विदेश के तमाम कवियों की कविताओं का अनुवाद 'देश-विदेश की कविताएँ' शीर्षक से किया।

unacademy

प्रगतिवादी काव्य के संदर्भ में केदारनाथ अग्रवाल ने लिखा है कि, 'अब हिंदी, कविता न तो रस की प्यासी है न अलंकार की इच्छुक और न संगीत के तुकांत पदावली की भूखी। अब वह चाहती है किसान की वाणी, मजदूर की वाणी और जन-मन की वाणी।'

नामवर सिंह ने लिखा है कि, 'हिंदी में व्यंग या तो निराला ने लिखा है या नागार्जुन ने और केदार ने'

केदारनाथ अग्रवाल को 1986 ई. में 'अपूर्वा' संग्रह पर **साहित्य अकादमी पुरस्कार** भी मिला है।

केदारनाथ अग्रवाल की प्रसिद्ध कविताएँ:

1. मांझी न बजाओ बंशी, 2. बसंती हवा

unacademy

2. राम विलास शर्मा (1912-2000):

रामविलास शर्मा का जन्म 1912 ई. में उन्नाव, उत्तर प्रदेश में हुआ था और मृत्यु 2000 ई. में हुआ था। इन्होंने कविताएँ बहुत ही कम मात्रा में लिखीं हैं, मूलतः इनका योगदान आलोचक, निबंधकार, विचारक के रूप में अधिक है। डॉ. रामविलास शर्मा भारत के प्रथम **'व्यास सम्मान'** विजेता थे। इन्हें प्रथम **शलाका सम्मान** भी 1986-87 ई. में दिया गया था।

unacademy

3. नागार्जुन (1910-1998):

नागार्जुन का जन्म 1911 ई. में तरउनी, दरभंगा में हुआ था और मृत्यु 1995 ई. में हुआ था। इनके माता-पिता का नाम क्रमशः गोकुल मिश्र तथा उमा देवी था। नागार्जुन का मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र है। इनका 'यात्री' और 'नागार्जुन' उपनाम है। नागार्जुन का पहला साहित्यिक उपनाम 'यात्री' था। संस्कृत और मैथिली में ये 'यात्री' नाम से कविताएँ लिखते थे। नागार्जुन 'बाबा' नाम से भी प्रसिद्ध थे।

नागार्जुन की खड़ी बोली में सर्वप्रथम प्रकाशित रचना 'राम के प्रति' है जो सन् 1935 ई. में लाहौर से निकलने वाली साप्ताहिक पत्रिका 'विश्वबन्धु' में छपी थी। नागार्जुन कृत 'भस्मांकुर' एक खण्डकाव्य है जो 'बरवै' छंद में है। नागार्जुन ने मैथिली भाषा में 'पत्रहीन नग्न गाछ' शीर्षक से काव्य लिखा। इसमें 52 कविताएँ संकलित हैं। इस कृति पर उन्हें सन् 1968 ई. में 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार मिला। नागार्जुन ने अपनी कविता 'प्रतिहिंसा ही स्थायी भाव है' के सन्दर्भ में लिखा है, 'यह तो नागार्जन-साहित्य का 'मेनिफेस्टो' है।'

unacademy

डॉ. बच्चन सिंह ने नागार्जुन की कविताओं को 'नुक्कड़ कविता' की संज्ञा दी है। नागार्जुन को राजनीतिक कवि के रूप में भी जाना जाता है। नागार्जुन को प्रगतिवाद का शलाका पुरुष कहा जाता है। नागार्जुन 'सानेट' की रचना के लिए प्रसिद्ध हैं।

नागार्जुन को **साहित्य अकादमी पुरस्कार**-1969 (मैथिली में, 'पत्र हीन नग्न गाछ' के लिए) मिला था इसके आलावा भारत भारती सम्मान (उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा), मैथिलीशरण गुप्त सम्मान (मध्य प्रदेश सरकार द्वारा), राजेन्द्र शिखर सम्मान -1994 (बिहार सरकार द्वारा), साहित्य अकादमी की सर्वोच्च फेलोशिप से सम्मानित, राहुल सांकृत्यायन सम्मान पश्चिम बंगाल सरकार से भी प्राप्त हुआ है।

नागार्जुन की प्रसिद्ध कविताएँ:

1. बादल को घिरते देखा है, 2. पाषाणी, 3. सिंदूर तिलकित भाल, 4. तुम्हारी दंतुरित मुस्कान, 5. पाँच पूत भारत माता के, 6. कालिदास, 7. हरिजन गाथा, 8. अकाल और उसके बाद, 9. मैं मिलिट्री का पुराना घोड़ा (बांग्ला से हिन्दी अनुवाद), 10. रवीन्द्र के प्रति, 11. गुलाबी चूड़ियाँ, 12. यह तुम थी, 13. प्रेत का बयान, 14. तन गई रीढ़, 15. चना जोर गरम, 16. आओ रानी हम ढोएँगे पालकी, 17. शासन की बंदूक, 18. पता नहीं दिल्ली की देवी गोरी हैं या काली

unacademy

4. रांगेय-राघव (1923-1962):

रांगेय राघव का जन्म 1923 ई. में और मृत्यु 1963 ई. में हुआ था। इनका मूलनाम त्र्यंबक वीर राघवाचार्य है। इनके पिता का नाम रंगाचार्य, माता कनकवल्ली और पत्नी सुलोचना थीं। इनका परिवार मूलरूप से तिरुपति, आंध्र प्रदेश का निवासी था।

'अजेय खण्डहर' में तीन शीर्षकों- झंकार, ललकार, हुंकार से स्तालिनग्राद युद्ध के कतिपय स्थलों का वर्णन किया गया है। पिघलते पत्थर और राह के दीपक रांगेय राघव के मुक्तक काव्य हैं।

unacademy

5. शिव-मंगल सिंह 'सुमन' (1915-2002):

शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म 1915 ई. में झगरपुर (उन्नाव में हुआ था और मृत्यु 2002 ई. में हुआ था। इनका उपनाम 'सुमन' है। सुमन जी का प्रथम संग्रह हिल्लोल (1939) है।

शिवमंगल सिंह 'सुमन' को निम्नलिखित पुरस्कार मिले हैं- पद्मश्री- 1974, पद्मभूषण- 1999, देव पुरस्कार- 1958, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार- 1974, **साहित्य अकादमी** पुरस्कार- 1974 'मिट्टी की बरात' के लिए, शिखर सम्मान- एम.पी. से 1993, **भारत भारती पुरस्कार-** 1993

शिवमंगल सिंह 'सुमन' की प्रसिद्ध कविताएँ:

1. गुनिया का यौवन, 2. कलकत्ते का अकाल, 3. और चल रही कुदाली, 4. मास्को अब भी दूर है, 5. चली आ रही है बढ़ी लाल सेना, 6. स्तालिन ग्राद, 7. सोवियत रूस के प्रति, 8. आज देश की मिट्टी बोल उठी, 9. जल रहे दीप जलती है जवानी

unacademy

6. त्रिलोचन (1917-2007):

'त्रिलोचन' का जन्म 1917 ई. में चिरानी पट्टी, सुल्तानपुर में हुआ था तथा मृत्यु 2007 ई. में हुआ था। त्रिलोचन का मूल नाम वासुदेव सिंह तथा उपनाम 'त्रिलोचन' है। इनका प्रथम संग्रह 'धरती' (1945 ई.) है। गजानन माधव 'मुक्तिबोध' ने त्रिलोचन को 'अवध का किसान कवि' कहा है।'अमोला' (1990 ई.) त्रिलोचन जी का अवधी काव्य कृति है। इस कृति में 2700 बरवै संगृहीत हैं। हिन्दी में सॉनेट लिखने के लिए त्रिलोचन शास्त्री प्रसिद्ध हैं।

त्रिलोचन शास्त्री को 1989-90 में हिंदी अकादमी ने शलाका सम्मान से सम्मानित किया था। हिंदी साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हे 'शास्त्री' और 'साहित्य रत्न' जैसे उपाधियों से सम्मानित किया जा चुका है। 1982 में ताप के ताए हुए दिन के लिए उन्हें **साहित्य अकादमी का पुरस्कार** भी मिला था। इसके अलावा उन्हें उत्तर प्रदेश हिंदी समिति पुरस्कार, हिंदी संस्थान सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, **शलाका सम्मान**, भवानी प्रसाद मिश्र राष्ट्रीय पुरस्कार, सुलभ साहित्य अकादमी सम्मान, भारतीय भाषा परिषद सम्मान आदि से भी सम्मानित किया गया था।

त्रिलोचन की प्रसिद्ध कविताएँ:

1. गद्य-पद्य कुछ लिखा करो, 2. चंपा काले-काले अक्षर नहीं चीन्हती, 3. तुम्हे सौंपता हूँ, 4. तुलसी बाबा, 5. पश्यंती, 6. नगई महरा, 7. नागार्जुन, 8. धूप में जग रूप सुंदर, 9. नेवला (लंबी कविता)

unacademy

1. आदि कवि. =वाल्मीकि
2. अपभ्रंश का वाल्मीकि/कालिदास =स्वयंभू
3. अभिनव जयदेव. =विद्यापति
4. हिंदी का प्रथम कवि. =सरहपा
5. प्रथम सूफी कवि. =असाइत

6. जड़िया कवि. =नंददास
7. वात्सल्य रस सम्राट. =सूरदास
8. हिंदी का जातीय कवि. =तुलसीदास /विद्यापति
9. कठिन काव्य का प्रेत. =केशवदास
10. पुराने पंथ का पथिक. =मतिराम

unacademy

11. प्रेम की पीर का कवि. =घनानंद
12. हिंदी नवजागरण का अग्रदूत. =भारतेंदु
13. हिंदी साहित्य में आधुनिकता के जन्मदाता = भारतेंदु
14. नियम नारायण शर्मा. =म. प्र. द्विवेदी
15. कल्लू अल्हइत. =म. प्र. द्विवेदी

16. कवि सम्राट. =अयोध्या सिंह उपाध्याय
17. राष्ट्र कवि. =मैथिलीशरण गुप्त
18. आधुनिक कविता के सुमेरू. =जयशंकर प्रसाद
19. कठिन गद्य का प्रेत. =अज्ञेय
20. कवियों का कवि. =शमशेर बहादुर सिंह

unacademy

21. बुंदेलखंड का चंदरबरदाई. =वृंदावन लाल वर्मा
22. मुनिमार्ग के हिमायती. =रामचंद्र शुक्ल
23. स्वच्छंदतावादी आलोचक. =नंददुलारे वाजपेयी
24. रसवादी आलोचक. =नगेंद्र
25. मैथिल कोकिल. =विद्यापति

26. हिंदुस्तान की तुती. =अमीर खुसरो
27. अष्टछाप/पुष्टिमार्ग का जहाज. =सूरदास
28. जबाँदानी का दावा रखने वाला कवि =घनानंद
29. प्रकृति का सुकुमार कवि. =सुमित्रा नंदन पंत
30. आधुनिक मीरा. =महादेवी वर्मा

unacademy

31. एक भारतीय आत्मा. =माखन लाल चतुर्वेदी
32. कलम का जादुगर. =रामवृक्ष बेनीपुरी
33. कलम का सिपाही/ कलम का मजदूर =प्रेमचंद
34. भारत का मैक्सिम गोर्की. =प्रेमचंद
35. गद्य-काव्य का लेखक =वियोगी हरि

36. आधुनिक कबीर. =नागार्जून
37. वाणी का डिक्टेटर. =कबीर
38. फैंटेसी का कवि. =मुक्तिबोध
39. नाथ संप्रदाय के प्रवर्तक = गोरखनाथ/गौरक्षपा
40. आधुनिक युग के चारण कवि = दिनकर

unacademy

41. आधुनिक युग के कबीर = नागार्जुन
42. आधुनिक युग के गोरखनाथ = निराला
43. संस्कृत के क्लासिकल पंडित = विद्यापति
44. हिंदी साहित्य जगत में ददा =मैथिलीशरण गुप्त
45. हिंदी साहित्य जगत में दादा = माखनलाल चतुर्वेदी

46. आग व राग के कवि = दिनकर
47. व्यष्टि चेतना के कवि = अज्ञेय
48. कविराज शिरोमणि = पद्माकर
49. प्रेम की पीर का कवि= घनानंद
50. ब्रजभाषा का भूषण = बिहारी

unacademy

unacademy

प्रयोगवाद

हिन्दी मे प्रयोगवाद का प्रारंभ सन् 1943 मे अज्ञेय के सम्पादन मे प्रकाशित तारसप्तक से माना जा सकता है। इसकी भूमिका मे अज्ञेय ने लिखा है-कि कवि नवीन राहों के अन्वेषी हैं।" स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अज्ञेय के सम्पादक मे प्रतीक पत्रिका प्रकाशन हुआ। उसमे प्रयोगवाद का स्वरूप स्पष्ट हुआ। सन् 1951 मे दूसरा तार सप्तक प्रकाशित हुआ और तत्पश्चात तीसरा तार सप्तक।

unacademy

प्रयोगवाद

प्रयोगवाद (1943 ई० से...) : यों तो प्रयोग हरेक युग में होते आये हैं किन्तु 'प्रयोगवाद' नाम कविताओं के लिए रूढ़ हो गया है जो कुछ नये बोधों, संवेदनाओं तथा उन्हें प्रेषित करनेवाले शिल्पगत चमत्कारों को लेकर शुरू-शुरू में 'तार सप्तक' के माध्यम से वर्ष 1943 ई० में प्रकाशन जगत में आई और जो प्रगतिशील कविताओं के साथ विकसित होती गयी तथा जिनका पर्यावसान 'नयी कविता' में हो गया।

काव्य में अनेक प्रकार के नए-नए कलात्मक प्रयोग किये गए इसीलिए इस कविता को प्रयोगवादी कविता कहा गया प्रयोगवादी काव्य में शैलीगत तथा व्यंजनागत नवीन प्रयोगों की प्रधानता होती है।

डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त के शब्दों में – "नयी कविता,नए समाज के नए मानव की नयी वत्तियों की नयी अभिव्यक्ति नयी शब्दावली में हैं,जो नए पाठकों के नए दिमाग पर नए ढंग से नया प्रभाव उत्पन्न करती हैं।"

unacademy

जन्म

प्रयोगवाद का जन्म 'छायावाद' और 'प्रगतिवाद' की रुढ़ियों की प्रतिक्रिया में हुआ। डॉ. नगेन्द्र प्रयोगवाद के उदय के विषय में लिखते हैं 'भाव क्षेत्र में छायावाद की अतिन्द्रियता और वायवी सौंदर्य चेतना के विरुद्ध एक वस्तुगत, मूर्त और ऐन्द्रिय चेतना का विकास हुआ और सौंदर्य की परिधि में केवल मसृण और मधुर के अतिरिक्त पुरुष, अनगढ़, भदेश आदि का समावेश हुआ।'

छायावादी कविता में वैयक्तिकता तो थी, किंतु उस वैयक्तिकता में उदात्त भावना थी। इसके विपरीत्त प्रगतिवाद में यथार्थ का चित्रण तो था, किंतु उसका प्रतिपाद्य विषय पूर्णत: सामाजिक समस्याओं पर आधारित था और उसमें राजनीति की बू थी।

"अत: इन दोनों की प्रतिक्रिया स्वरूप प्रयोगवाद का उद्भव हुआ, जो 'घोर अहंमवादी', 'वैयक्तिकता' एवं 'नग्न-यथार्थवाद' को लेकर चला।"

unacademy

श्री लक्ष्मी कांत वर्मा के शब्दों में, 'प्रथम तो छायावाद ने अपने शब्दाडम्बर में बहुत से शब्दों और बिम्बों के गतिशील तत्त्वों को नष्ट कर दिया था। दूसरे, प्रगतिवाद ने सामाजिकता के नाम पर विभिन्न भाव-स्तरों एवं शब्द-संस्कार को अभिधात्मक बना दिया था।

ऐसी स्थिति में नए भाव-बोध को व्यक्त करने के लिए न तो शब्दों में सामर्थ्य था और न परम्परा से मिली हुई शैली में। परिणामस्वरूप उन कवियों को जो इनसे पृथक थे,सर्वथा नया स्वर और नये माध्यमों का प्रयोग करना पड़ा। ऐसा इसलिए और भी करना पड़ा,क्योंकि भाव-स्तर की नई अनुभूतियां विषय और संदर्भ में इन दोनों से सर्वथा भिन्न थी।

unacademy

प्रयोग शब्द का सामान्य अर्थ है, 'नई दिशा में अन्वेषण का प्रयास'। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रयोग निरंतर चलते रहते हैं। काव्य के क्षेत्र में भी पूर्ववर्ती युग की प्रतिक्रिया स्वरूप या नवीन युग-सापेक्ष चेतना की अभिव्यक्ति हेतु प्रयोग होते रहे हैं। सभी जागरूक कवियों में रूढ़ियों को तोड़कर या सृजित पथ को छोड़ कर नवीन पगडंडियों पर चलने की प्रवृत्ति न्यूनाधिक मात्रा में दिखाई पड़ती है। चाहे यह पगडंडी राजपथ का रूप ग्रहण न कर सके।

सन् 1943 या इससे भी पांच-छ: वर्ष पूर्व हिंदी कविता में प्रयोगवादी कही जाने वाली कविता की पग-ध्वनि सुनाई देने लगी थी। कुछ लोगों का मानना है कि 1939 में नरोत्तम नागर के संपादकत्व में निकलने वाली पत्रिका 'उच्छृंखल' में इस प्रकार की कविताएं छपने लगी थी जिसमें 'अस्वीकार','आत्यंतिक विच्छेद' और व्यापक 'मूर्ति-भंजन' का स्वर मुखर था तो कुछ लोग निराला की 'नये पत्ते', 'बेला' और 'कुकुरमुत्ता' में इस नवीन काव्य-धारा के लक्षण देखते हैं।

लेकिन 1943 में अज्ञेय के संपादन में 'तार-सप्तक' के प्रकाशन से प्रयोगवादी कविता का आकार स्पष्ट होने लगा और दूसरे तार-सप्तक के प्रकाशन वर्ष 1951 तक यह स्पष्ट हो गया।

unacademy

मुख्य तथ्य

इस तरह की कविताओं को सबसे पहले नंद दुलारे बाजपेयी ने 'प्रयोगवादी कविता' कहा।

प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया में उभरे और 1943 ई० के बाद की अज्ञेय, गिरिजा कुमार माथुर, मुक्तिबोध, नेमिचंद जैन, भारत भूषण अग्रवाल, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती आदि तथा नकेनवादियों नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार व नरेश की कविताएँ प्रयोगवादी कविताएँ हैं। प्रयोगवाद के अगुआ कवि अज्ञेय को 'प्रयोगवाद का प्रवर्तक' कहा जाता है।

चूँकि नकेनवादियों ने अपने काव्य को 'प्रयोग पद्य' यानी 'प्रपद्य' कहा है, इसलिए नकेनवाद को 'प्रपद्यवाद' भी कहा जाता है।

चूंकि प्रयोगवाद का उदय प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया में हुआ इसलिए यह स्वाभाविक था कि प्रयोगवाद समाज की तुलना में व्यक्ति को, विचार धारा की तुलना में अनुभव को, विषय वस्तु की तुलना में कलात्मकता को महत्व देता। मतलब कि प्रयोगवाद भाव में व्यक्ति-सत्य तथा शिल्प में रूपवाद का पक्षधर है।

unacademy

शिल्प के प्रति आगह देखकर ही इन्हें आलोचकों ने रूपवादी (Formist) तथा इनकी कविताओं को 'रूपाकाराग्रही कविता कहा।

प्रगतिवाद ने जहाँ शोषित वर्ग/निम्न वर्ग के जीवन को अपनी कविता के केन्द्र में रखा था जो उनके लिए अनजीया, जनभागा था वहाँ मध्यवर्गीय प्रयोगवादी कवियों ने उस यथार्थ का चित्रण किया जो स्वयं उनका जीया हुआ डेजा था। इसी कारण उनकी कविता में विस्तार कम है लेकिन गहराई अधिक।

unacademy

तारसप्तक की भूमिका :-

'तारसप्तक' में विविध विचारधाराओं के कवि एक साथ एकत्रित हुए जिनमें अज्ञेय को छोड़कर ज्यादातर कवि प्रगतिशील विचाराधारा के समर्थक थे। किंतु प्रयोगवाद नाम इस काव्य-प्रवृति के विरोधियों द्वारा दिया गया है।

'प्रयोगवाद' के कवियों ने **'प्रगतिवाद'** पर दो आरोप साफ तौर पर लगाए –

1. प्रगतिवाद, साहित्य का संकीर्णतावादी आंदोलन है जिसमें रचनाकार की स्वतंत्रता का अपहरण किया जाता है; और
2. प्रगतिवाद, विषय-वस्तु पर अत्यधिक बल देकर विचारधारा की नारेबाजी का पफार्मूला अपनाता है।

इसमें साहित्य की कलात्मकता औ रूप-विधान की भयंकर उपेक्षा होती है। अज्ञेय ने प्रगतिवाद' से असंतुष्ट होकर **'व्यक्ति स्वातंत्र्य सिद्धान् की स्थापना'** का अभियान प्रयोगवाद' में चलाया। प्रगतिशील साहित्य में साहित्येतर मूल्यों को स्थान मिल था – किंतु प्रयोगवाद' साहित्यिक मूल्यों को केन्द्र में रखकर आगे बढा।

unacademy

फलतः 'प्रयोगवाद' के अतिवाद से बचने के चक्कर में प्रयोगवाद' स्वयं अपने ही अंतर्विरोधों अतिवादों का शिकार होकर रूपवाद (फारमलिज) के जाल में फंसता गया जिससे उसे मुक्ति नयी कविता आंदोलन में मिली।

इसी समय काव्य में प्रयोग को आधार बनाकर एक आंदोलन नकेनवादियों या प्रपद्यवादियों ने खड़ा कर दिया। **'प्रयोग'** शब्द अंग्रेजी के **'एक्सपेरीमेण्ट'** का हिंदी पर्याय है और इसका संबंध विज्ञान के प्रयोग' से न होकर आधुनिक चित्रकला के प्रयोग से है।

आधुनिक चित्रकला के प्रवर्तक चित्रकार सेजा ने आपने चित्रों को प्रयोग' कहा – फिर क्या था कि चित्रकला से यह प्रयोग' शब्द साहित्य में आया और चल पड़ा। अन्यरथा **'प्रयोग या प्रयोगवाद'** का **'एक्सपेरीमेन्टलिज्म'** जैसा कोई समानांतर आधार पश्चिम में भी नही है।

नकेनवादियों ने 'प्रयोग' को काव्य में साध्य और साधन, दोनों घोषित किया। लेकिन 'प्रयोगवाद' के काफी पीछे 'नकेनवाद' आंदोलन चला। नकेनवादी काव्य **"प्रपद्यद्वादश-सूत्री"** तथा **"फक्किका"** के साथ छपकर आया और अंत में **"पस्पशा"** के अंतर्गत **"प्रयोगवाद"** का वास्तविक आरंभ नलिन जी की कविताओं से घोषित किया गया ।

unacademy

इसमें **"प्रयोग दश सूत्री"** देकर अज्ञेय जी के विचारों की खुली आलोचना की गई तथा **"दो सूत्र'** कहते हैं कि

1. "प्रयोगवाद स्तंत्र स्वतंत्र है;
2. उसके लिए शास्त्र या बल निर्धारण नियम अनुपयुक्त है।"

लेकिन बिहार की भूमि से उठा यह काव्य – आंदोलन शेष हिंदी क्षेत्रों में भान्यता प्राप्त नहीं कर सका। नकेनवाद का भाव और व्यंजना स्थापत्य तथा **"प्रपद्यवाद की दार्शनिक पृष्ठभूमि'** को ये रचनाकार स्वयं स्पष्ट नहीं कर सके।

फलस्वरूप नतीजा यह हुआ कि काव्य-आंदोलन एकदम किनारे पड़कर विलुप्त हो गया।

unacademy

नकेनवाद या प्रपद्यवाद – 1956 ई.

⇒ 'अज्ञेय' द्वारा संपादित 'तारसप्तक' व 'दूसरा-सप्तक' से प्रेरित होकर 'नलिन विलोचन शर्मा' ने अपने दो साथियों 'केसरी कुमार' और 'नरेश कुमार' को मिलाकर 'नकेनवाद' (तीनों व्यक्तियों के नामों के प्रथम अक्षर के आधार पर) की स्थापना की थी। इसे ही 'प्रपद्यवाद' के नाम से भी पुकारा जाता है।

⇒ 'नकेनवाद के प्रपद्यवाद' का प्रकाशन 1956 ई. में हुआ था।

⇔ 'प्रपद्यवाद' का दावा था कि असली प्रयोगवाद नकेन ही हैं।

⇒ डॉ. बच्चन सिंह के अनुसार 'प्रपद्यवाद' एक प्रकार का 'रूपवाद' या 'कलावाद' था

unacademy

⇔ प्रपद्यवाद के विविध सूत्र – प्रपद्यवाद के प्रतिनिधि के रूप में 'केसरी कुमार' ने इसके विविध सूत्रों की चर्चा की थी, जिसमें से कुछ निम्न प्रकार है-

1. प्रपद्यवाद भाव और व्यंजना का स्थापत्य है।
2. प्रपद्यवाद के लिए किसी शास्त्र के द्वारा निर्धारित नियम अनुपयुक्त हैं।
3. प्रपद्यवाद पूर्ववर्तियों की महान् परिपाटियों को निष्प्राण मानता है।
4. प्रपद्यवाद प्रयोग की साधन ही नहीं, साध्य मानता है।
5. प्रपद्यवाद दूसरों के अनुकरण की तरह अपना अनुकरण भी वर्जित मानता है।

वस्तुत: नकेनवादियों का यह प्रपद्यवाद 'अज्ञेय' के प्रयोगवाद की स्पर्धा में खड़ा किया गया आंदोलन था, जो कालान्तर में अज्ञेय से भी आगे

'डॉ. नगेन्द्र' के अनुसार – "हिन्दी साहित्य में 'प्रयोगवाद' नाम उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया है, जो कुछ नये भाव बोधों, संवेदनाओं तथा उन्हें प्रेषित करने वाले शिल्पगत चमत्कारों को लेकर शुरू-शुरू में 'तार-सप्तक' के माध्यम से सन् 1943 ई. में प्रकाशन जगत् में आयी और जो प्रगतिशील कविताओं के साथ विकसित होती गयीं तथा जिनका पर्यवसान (समापन) नयी कविता में हो गया।"

⇒ 'डॉ. गणपति चन्द्रगुप्त' के अनुसार – "सन् 1943 ई. में अज्ञेय के नेतृत्व में हिन्दी कविता के क्षेत्र में एक नये आन्दोलन का प्रवर्तन हुआ, जिसे अब तक विभिन्न संज्ञाएँ – 'प्रयोगवाद', 'प्रपद्यवाद', 'नयी कविता' आदि प्रदान की गयी हैं। ये संज्ञाएँ इसके विकास की विभिन्न अवस्थाओं एवं दिशाओं को सूचित करती हैं; यथा – प्रारम्भ में जबकि कवियों का दृष्टिकोण एवं लक्ष्य स्पष्ट नहीं था, नूतनता की खोज के लिए केवल प्रयोग की घोषणा की गयी थी तो इसे 'प्रयोगवाद' कहा गया।"

unacademy

इसी आन्दोलन की एक शाखा ने श्री नलिन विलोचन शर्मा के नेतृत्व में प्रयोग को अपना साध्य स्वीकार करते हुए अपनी कविताओं के लिए 'प्रपद्यवाद' का प्रयोग किया।

– डाॅ. जगदीश गुप्त एवं लक्ष्मीकान्त वर्मा ने इसे अधिक व्यापक क्षेत्र प्रदान करते हुए 'नयी कविता' नाम से प्रचारित किया।

⇒ सारांश – उपर्युक्त दोनों विद्वानों के कथनों के आधार पर सारांशतः यह कहा जा सकता है कि "सन् 1943 ई. में अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार-सप्तक' के माध्यम से नये भावों, नये विचारों एवं नये प्रयोगों के साथ जो काव्य हिन्दी में रचा गया, उसे ही 'प्रयोगवाद' के नाम से पुकारा जाता है।"

विशेष तथ्य –

1. 'तार सप्तक' के कवियों ने इस काव्यधारा की कविताओं के लिए 'प्रयोगवाद' शब्द का प्रयोग नहीं करके 'प्रयोगशील' अथवा 'प्रयोग' शब्दों का ही प्रयोग किया था।
2. इस काव्यधारा की कविताओं को 'प्रयोगवाद' नाम सर्वप्रथम आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी ने अपने एक निबंध 'प्रयोगवादी रचनाएँ' में प्रदान किया था।
3. अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय) इस काव्यधारा के प्रवर्तक माने जाते हैं। उनके द्वारा संपादित 'प्रतीक' पत्रिका से इसकी शुरूआत हुई मानी जाती है।
4. लक्ष्मीकांत वर्मा के अनुसार "प्रयोगवाद ज्ञान से अज्ञान की ओर बढ़ने की बौद्धिक जागरुकता है।"
5. आगे चलकर 'प्रयोगवाद' का ही विकास 'नयी कविता' के नाम से हुआ था।

6. डॉ. बच्चन सिंह के अनुसार "प्रयोगवाद का मूलाधार 'वैयक्तिक्ता' या 'व्यक्तिवाद' (प्राइवेसी) है।"

7. 'प्रयोगवाद' को 'प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया' भी कहा जाता है।

8. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त ने 'प्रयोगवाद एवं नयी कविता' दोनों काव्य आन्दोलनों को संयुक्त रूप से "अतियथार्थवादी काव्य परम्परा" नाम प्रदान किया है।

9. हिन्दी का प्रयोगवादी आन्दोलन मूलतः पश्चिम (अंग्रेजी) के 'न्यू सिगनेचर' आन्दोलन से प्रभावित नजर आता है।

न्यू सिगनेचर – सन् 1932 ई. में 'न्यू सिगनेचर' शीर्षक से एक काव्य संग्रह 'ब्रिटेन' में प्रकाशित हुआ था। इसमें स्टेफेन स्पैंडर, आडेन, लेहमान, एम्पसन आदि की रचनाएँ संगृहीत थीं।

unacademy

10. अज्ञेय ने इस काव्यधारा के लिए 'प्रयोगवाद' नाम को स्वीकार नहीं किया था। इन्होंने 'दूसरा सप्तक' (1951 ई.) की भूमिका में इस नाम का घोर विरोध किया था तथा 'प्रतीक' पत्रिका के जून-1951 के अंक में इस काव्य के लिए 'नयी कविता' संज्ञा का प्रयोग किया था।

11. प्रयोगवाद को प्रतीकवाद भी कहा जाता है, 'प्रयोगवादी कविता' नवीन प्रतीक विधान से युक्त है।

12. अस्तित्ववाद ने प्रयोगवाद को सर्वाधिक प्रभावित किया है।

13. प्रयोगवादी कविताओं में मध्यमवर्गीय व्यक्ति की जीवन की पीड़ा के अनेक स्वर उभरे हैं, परन्तु इसमें दमित कामवासना की प्रधानता देखने को मिलती है।

14. 'लोक कल्याण की उपेक्षा' प्रयोगवाद का सबसे बड़ा दोष माना जाता है।

15. प्रयोगवादी कवि यथार्थवादी हैं। वे भावुकता के स्थान पर ठोस बौद्धिकता को स्वीकार करते हैं।

unacademy

16. प्रयोगधर्मिता की प्रयोगवादी काव्य का इष्ट है। भाषा, शिल्प, छंद, अलंकार, प्रतीक, बिम्ब, उपमान आदि की दृष्टि से इन कवियों ने नये-नये प्रयोग किये हैं।

17. नन्द दुलारे वाजपेयी ने प्रयोगवाद को 'बैठे ठाले लोगों का धंधा' कहकर पुकारा है।

"तारसप्तक"

⇒ अज्ञेय के अनुसार "एक ही प्रकार की भाव-चेतना के तार में पिरोए सात कवियों की रचनाओं का संकलन 'तारसप्तक' कहलाता है।"

⇔ 'तार सप्तक' मूलतः 'प्रभाकर माचवे' के दिमाग की उपज मानी जाती है, परन्तु इसके प्रवर्तन का श्रेय अज्ञेय को प्रदान किया जाता है।

⇒ अज्ञेय ने 'तारसप्तक' के कवियों के बारे में लिखा है- "ये सातों कवि किसी एक स्कूल के नहीं हैं। वे राही नहीं, अपितु 'राहों के अन्वेषी' हैं।"

unacademy

हिन्दी साहित्य जगत् में अब तक चार 'तार-सप्तकों' की स्थापना हो चुकी है

- तार-सप्तक-1943 ई.
- दूसरा-सप्तक- 1951 ई.
- तीसरा-सप्तक-1959 ई.
- चौथा-सप्तक-1979 ई.

1. तार-सप्तक-1943 ई.

(1) अज्ञेय (2) नेमिचंद्र जैन (3) रामविलास शर्मा (4) मुक्तिबोध
(5) भारत भूषण अग्रवाल (6) प्रभाकर माचवे (7) गिरिजा कुमार माथुर

Trick:- **'अज्ञेय ने नेमि राम से मुक्ति पाने के लिए भारत प्रभाकर को गिरा दिया।'**

नोट:- 1. 'तार-सप्तक' को ही 'प्रथम सप्तक' भी कहा जाता है।
2. हिन्दी साहित्य में 'आधुनिक संवदेना का सूत्रपात' 'तार सप्तक' (1943 ई.) के प्रकाशन से ही माना जाता है।

unacademy

2. दूसरा-सप्तक- 1951 ई.

(1) हरिनारायण व्यास (2) धर्मवीर भारती (3) रघुवीर सहाय (4) शकुन्तला माथुर
(5) नरेश मेहता (6) शमशेर बहादुर सिंह (7) भवानी प्रसाद मिश्र
Trick :- हरि धर्म के लिए रघुवीर ने शकुन्तला को नरेश सिंह के भवन से निकाल दिया।

3. तीसरा-सप्तक-1959 ई.

(1) कुँवर नारायण (2) केदारनाथ सिंह (3) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
(4) विजय देव नारायण साही (5) कीर्ति चैधरी (6) प्रयाग नारायण त्रिपाठी
(7) मदन वात्स्यायन
Trick:- कुँवर केदार के सर्व विजय की कीर्ति प्रयाग से लेकर मदनपुर तक फैल गयी।

unacademy

4. चौथा -सप्तक-1979 ई.

(1) अवधेश कुमार (2) राजकुमार कुंभज (3) श्रीराम वर्मा (4) राजेन्द्र किशोर

(5) नन्दकिशोर आचार्य (6) सुमन राजे (7) स्वदेश भारती

Trick:- अवधेश के राजकुमार श्रीराम ने राजेन्द्र नन्दकिशोर को सुमन के साथ स्वदेश भेज दिया।

तार सप्तक विशेषः

- ⇔तार सप्तकों में प्रथम महिला- शकुन्तला माथुर (दुसरे तार सप्तक से)
- तार सप्तकों में कुल महिला- 3
- ⇔तार सप्तकों में राजस्थान से –नन्दकिशोर आचार्य
- तार सप्तकों में पति-पत्नि- गिरिजा कुमार माथुर,शकुन्तला माथुर

unacademy

प्रयोगवादी काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (विशेषताएँ) –

- अतियथार्थवादिता
- बौद्धिकता की अतिशयता
- घोर वैयक्तिकता
- वाद व विचारधारा का विरोध
- नवीन उपमानों का प्रयोग
- भाषा की स्वच्छंदता
- निराशावाद
- साहस और जोखिम
- वैचित्र्य प्रदर्शन (शिल्पगत वैशिष्ट्य)
- निरंतर प्रयोगशीलता
- व्यापक अनास्था की भावना
- सामाजिक यथार्थवाद की भावना
- शृंगार का उन्मुक्त चित्रण
- क्षणवाद
- कुण्ठा और निराशा का चित्रण
- नग्नता (भदेस) का निरुपण

unacademy

प्रगतिवाद व प्रयोगवाद में मुख्य अन्तर –

1. 'प्रगतिवादी कविता' में शोषित वर्ग/निम्न वर्ग को केन्द्र में रखा गया है, जबकि 'प्रयोगवादी कविता' में स्वयं के जीये हुए/भोगे हुए यथार्थ जीवन का चित्रण प्राप्त होता है।

2. प्रगतिवादी कविता 'विचारधारा को महत्व' देती है, जबकि प्रयोगवादी कविता 'अनुभव को महत्व' देती है।

3. प्रगतिवादी कविता में सामाजिक भावना की प्रधानता दिखायी देती है, जबकि प्रयोगवादी कविता में व्यक्तिगत भावना की प्रधानता दिखायी देती है।

4. प्रगतिवादी कविता में 'विषयवस्तु को अधिक महत्व' दिया गया है, जबकि प्रयोगवादी कविता में 'कलात्मकता को अधिक महत्व' दिया गया है।

unacademy

तारसप्तक के कवियों का वर्गीकरण

⇒ 'तार सप्तक' और 'प्रतीक' पत्रिका को देखकर यह स्पष्ट होता है कि इनमें संगृहीत या प्रकाशित कवियों के अनुभव के क्षेत्र, दृष्टिकोण और कथानक एक जैसे नहीं हैं।

डॉ. नगेन्द्र ने तार-सप्तक के कवियों को निम्नानुसार वर्गीकृत किया है-

1. विचारों से समाजवादी एवं संस्कारों से व्यक्तिवादी – इस श्रेणी में 'शमशेर बहादुर सिंह', 'नरेश मेहता' और 'नेमिचंद्र जैन' को शामिल किया जाता है।

2. विचारों और क्रियाओं दोनों से समाजवादी – इस श्रेणी में 'राम विलास शर्मा' व 'गजानन माधव मुक्तिबोध' को शामिल किया जाता है।

3. प्रगतिवादी कविता के द्वारा व्यक्त होते हुए जीवन-मूल्यों और सामाजिक प्रश्नों को असत्य या सत्याभास मानकर अपने व्यक्तिगत जीवन में तड़पने वाली गहरी संवेदनाओं को ही रूपायित करने वाले अन्य सभी कवि लगभग इसी श्रेणी के हैं। प्रायः ये सभी कवि मध्यवर्ग से संबंधित हैं।

unacademy

प्रयोगवादी काव्य धारा के प्रमुख कवि

1. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

जन्मकाल – 1911 ई. (07 मार्च, 1911)

मृत्युकाल – 1987 ई. (04 अप्रेल, 1987)

जन्मस्थल – ग्राम – कसिया, जिला – देवरिया

प्रमुख रचनाएँ –

(क) काव्यात्मक रचनाएँ –

1. भग्नदूत – 1933 ई. 2. चिन्ता – 1942 ई. 3. इत्यलम् – 1946 ई.

4. हरी घास पर क्षण भर – 1949 5. बावरा अहेरी – 1954 ई.

6. इन्द्रधनु रौंदे हुए – 1957 ई.

7. अरी ओ करुणा प्रभामय – 1959 ई.

unacademy

8. आंगन के पार द्वार- 1961 ई. 9. कितनी नावों में कितनी बार
10. सागर मुद्रा
11. महावृक्ष के नीचे 12. नदी की बाँक पर छाया-1981
13. रूपाम्बरा 14. प्रिजन डेज एण्ड अदर पाॅयम्स
15. क्योंकि मैं उसे जानता हूँ
16. सावन मेघ 17. अन्तर्गुहावासी (कविता)
18. ऐसा कोई घर आपने देखा है – 1986

(ख) कहानी संग्रह

1. परम्परा 2. त्रिपथगा 3. जयदोल
4. कोठरी की बात 5. शरणार्थी 6. मेरी प्रिय कहानियाँ

(ग) उपन्यास

- **शेखर एक जीवनी**
- **नदी के द्वीप**
- **अपने-अपने अजनबी**

unacademy

विशेष तथ्य –

1. 'अज्ञेयजी' के द्वारा निम्नलिखित पत्र-पत्रिकाओं का संपादन कार्य किया गया था –

(1) विशाल भारत (कोलकता से प्रकाशित पत्र)
(2) सैनिक (आगरा से प्रकाशित पत्र)
(3) दिनमान (दिल्ली से प्रकाशित पत्र)
(4) प्रतीक (पत्रिका)
(5) नवभारत टाईम्स

काव्य संकलन –

(1)तार-सप्तक (2) दूसरा-सप्तक (3) तीसरा सप्तक
(4) चौथा सप्तक (5) रूपाम्बरा

unacademy

2. 'आंगन के पार द्वार' रचना के लिए इनको 1964 ई. में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्राप्त हुआ था।
इस काव्य रचना को निम्न तीन भागों में विभाजित किया गया है –
(1) सलिला (2) चक्रांतशिला (3) असाध्य वीणा
3. 'कितनी नावों में कितनी बार' रचना के लिए इनको 1978 ई. में 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ था।
4. आपने 1943 ई. से 1946 ई. तक सेना में नौकरी की थी, जहाँ आपने सेना के लिए बम बनाने का कार्य भी किया था।
5. इनका जीवन यायावारी एवं क्रान्तिकारी रहा, जिसके कारण ये किसी एक व्यवस्था से बँध कर नहीं रह सके।

unacademy

6. इन्होंने 'गधे' जैसे जानवर को भी काव्य का विषय बनाया है। यथा –
"मूत्र सिंचित मृतिका के वृत्त में,
तीन टाँगों पर खड़ा; नतग्रीव
धैर्य-धन गदहा।।"
7. इनके काव्य की मूल प्रवृत्ति आत्म-स्थान या अपने आपको थोपने की रही है। अर्थात् इन्होंने स्वयं का गुणगान करके दूसरों को तुच्छ सिद्ध करने का प्रयास किया है।
8. इनकी कविताओं में प्रकृति, नारी, काम वासना आदि विभिन्न विषयों का निरुपण हुआ है, किन्तु वहाँ भी ये अपने 'अहं' और 'दंभ' को छोड़ नहीं पाये है।
9. 'हरी घास पर क्षण भर' इनकी प्रौढ़ रचना मानी जाती है। इसमें बुलबुल, श्यामा, फुदकी, दंहगल, कौआ जैसे विषयों को लेकर कवि ने अपनी अनुभूति का परिचय दिया है।

unacademy

10. 'बावरा-अहेरी' इनके जीवन दर्शन को प्रतिबिम्बित करने वाली रचना है।
11. 'इन्द्रधनु रौंदे हुए' रचना में नये कवियों की भावनाओं को अभिव्यक्त किया गया है।
12. हिन्दी साहित्य में इनको 'कठिन गद्य का प्रेत' भी कहा जाता है।
नोट:- 'केशवदास' को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहते हैं।
13. इनकी 'असाध्य वीणा' कविता में मौन भी है, अद्वैत भी है, रचना प्रक्रिया भी है, रहस्य भी है। यदि नहीं है तो संवेदना। यह इनकी 'प्रतिनिधि कविता' भी मानी जाती है। यह कविता जैन बुद्धिज्म (ध्यान संप्रदाय या अ-शब्द सम्प्रदाय) पर आधारित मानी जाती है।
14. इनकी कविताओं में 'ओजमयी पदावली' देखने को मिलती है।
15. इनको 'व्यष्टि चेतना का कवि' भी कहा जाता है।

unacademy

2. भवानी प्रसाद मिश्र

⇒ जन्मकाल – 1914 ई.

⇔ मृत्युकाल – 1985 ई.

⇒ जन्मस्थान – ग्राम – टिमरणी, जिला – होशंगाबाद (म.प्र.)

प्रमुख रचनाएँ –

1. गीत फरोश 2. सतपुड़ा के जंगल 3. चकित है दुःख
4. टूटने का सुख 5. अँधेरी कविताएँ 6. बुनी हुई रस्सी
7. त्रिकाल सध्या 8. परिवर्तन जिए
9. अनाम तुम आते हो
10. कालजयी 11. फसलें और फूल 12. सम्प्रति
13. वाणी की दीनता

unacademy

14. कमल के फूल 15. इदं न मम
16. सन्नाटा 17. असाधारण (कविता) 18. स्नेह शपथ (कविता)
19. मानसरोवर दिन
20. नीली रेखा तक – 1984
21. वे मेरे कोहरे हैं – 1993

विशेष तथ्य –

1. इन्होंने 'कल्पना' एवं गाँधी-वाङ्मय' नामक पत्र/पत्रिकाओं का संपादन कार्य किया था।
2. आपने अपने पिता एवं बडे भाई की प्रेरणा से मात्र 10 वर्ष की अल्पायु में अपनी पहली कविता 'घोडे' विषय पर लिख डाली थी।

unacademy

3. इनकी सहज भाषा को देखकर गाँधीजी के चरखे की सहजता का सा आभास होता है, जिसके कारण इनको 'कविता का गाँधी' भी कहा जाता है।

4. मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आपको 'शिखर सम्मान' प्रदान किया गया था।

5. 'बुनी हुई रस्सी' रचना के लिए इनको 1972 ई. में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्राप्त हुआ था।

unacademy

3. गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

⇒ जन्मकाल – 1917 ई.

⇔ मृत्युकाल – 1964 ई.

⇒ जन्मस्थान – श्योपुर (ग्वालियर)

⇔प्रमुख रचनाएँ –

(क) काव्य संग्रह –

1. चाँद का मुँह टेढ़ा है-1964 ई. 2. भूरी-भूरी खाक धूल-1980 ई. (इस काव्य संग्रह का प्रकाशन तो बाद में हुआ था, किन्तु इस कविताएँ कालक्रम की दृष्टि से प्रथम संग्रह से पहले की मानी जाती हैं।)

unacademy

(ख) प्रसिद्ध रचनाएँ –

1. अंधेरे में 2. ब्रह्मराक्षस 3. पूँजीवाद समाज के प्रति
4. भूल गलती 5. दिमागी गुहान्धकार

(ग) गद्य रचना –

1. भारत: इतिहास और संस्कृति (मध्यप्रदेश सरकार द्वारा 19 सितम्बर, 1962 ई. को इस पुस्तक पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।)

विशेष तथ्य –

1. इनकी कविताओं को 'स्वाधीन भारत का इस्पाती ढाँचा' कहा जाता है।
2. इनको 'तीव्र इन्द्रिय बोध का कवि', 'भयानक खबरों का कवि' एवं फैंटेसी का कवि' भी कहा जाता है।
3. रामविलास शर्मा की तरह ये भी केवल अज्ञेय जी की कृपा से ही 'तारसप्तक' में स्थान पा सके थे। कवित्व कर्म में कोई विशेष उपलब्धि प्राप्त नहीं कर सके।

unacademy

4. इन्होंने कला के निम्न तीन क्षण स्वीकार किये हैं –

(।) अनुभव का फैंटेसी में रूपान्तरण (2) फैंटेसी के शब्दबद्ध होने की प्रक्रिया

(3) जीवन का उत्कट तीव्र अनुभव क्षण

unacademy

4. गिरिजा कुमार माधुर

⇒ जन्मकाल – 1918 ई.

⇔ मृत्युकाल – 1994 ई.

⇒ जन्मस्थान – अशोकनगर (म.प्र.)

⇔ प्रमुख रचनाएँ –

1. मंजौर 2. नाश और निर्माण 3. धूप के धान 4. शिलापंख चमकीले 5. छाया मत छूना (मन) 6. भीतरी नदी की यात्रा 7. साक्षी रहे वर्तमान 8. पृथ्वी कल्प 9. कल्पान्तर-1983 ई. 10. मैं वक्त के हूँ सामने-1990 11. मुझे और अभी कहना है-1991 ई.

⇒ विशेष तथ्य –
1. ये 'रोमानी मिजाज के कवि' माने जाते हैं।
2. ये 'हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब-एक दिन' गीत के रचनाकार हैं। यह गीत अंग्रेजी के 'ॅम ेीसंस वअमतबवउम' का हिन्दी अनुवाद है।
3. आप मध्यप्रदेश आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के 'उपमहानिदेशक' भी रहे थे।
4. आपने 'गगनांचल' नामक पत्रिका का संपादन कार्य भी किया था।
5. इनकी प्रारम्भिक कविताओं में रोमांस और सौंदर्यलिप्सा की अभिव्यक्ति हुई हैं तथा उन पर छायावादी शैली का भी पर्याप्त प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।
6. डाॅ. शिवकुमार मिश्र के अनुसार इनकी कविताओं पर निराशा, विषाद, असफलता और रुग्णता की छाप पायी जाती है।
7. अपनी कविताओं में इन्होंने कहीं-कहीं 'सवैया' छंद को तोडकर एक नया छंदरूप प्रदान किया है।
8. 'मैं वक्त के हूँ सामने' रचना के लिए इनको 1991 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

unacademy

5. धर्मवीर भारती

⇒ जन्मकाल – 1926 ई.

⇔ मृत्युकाल – 1997 ई.

⇒ जन्मस्थान – इलाहाबाद

⇒ प्रमुख रचनाएँ –

1. ठण्डा लोहा-1952 ई. 2. सात गीत वर्ष-1959 ई.
3. अंधा युग (गीतिनाट्य)
4. कनुप्रिया 5. सपना अभी भी-1993
6. आद्यन्त-1999

प्रसिद्ध कविताएँ –

1. प्रमथ्यु गाथा 2. सृष्टि आखिरी आदमी 3. देशान्तर
4. टूटा पहिया

unacademy

⇒ विशेष तथ्य –

1. ये प्रारम्भ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी के प्राध्यापक रहे।
2. ये 1987 ई. तक 'धर्मयुग' पत्रिका के संपादक रहे।
3. इनकी कविताएँ मूलतः गीतात्मक है। इनमें लोक-परिवेश की मस्ती और उल्लास के स्थान पर उदासी और सूनापन अधिक नजर आता है।
4. इनकी कविताओं के प्रमुख विषय रूपासक्ति, उद्दाम कामवासना एवं स्वच्छंद विलास है। (डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त)
5. 'कनुप्रिया' रचना में राधा के परंपरागत चरित्र को नये रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। राधा-कृष्ण के वासनात्मक संबंधों का चित्रण इसमें पूर्ण रुचि एवं सजीवता के साथ किया गया है।

unacademy

6. आपने 'धर्मयुग', 'निकष', एवं 'आलोचना' नामक तीन पत्रिकाओं का संपादन कार्य किया गया था।

7. साहित्यकारों की सहायतार्थ आपने 1943 में 'परिमल' नामक संस्था की स्थापना की थी।

8. आपने 'सिद्ध-साहित्य' पर शोध-उपाधि प्राप्त की थी।

9. आपके द्वारा रचित 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' रचना पर एक टी.वी. धारावाहिक (सात कड़ियों में) भी प्रसारित हुआ था।

10. 'पंख, पहिए और पट्टियाँ' का संबंध 'अंधा युग' काव्य से माना जाता है।

6. नरेश मेहता

⇒ जन्मकाल – 1922 ई.

⇔ प्रमुख रचनाएँ –

1. वनपांखी सुनो
2. बोलने दो चीड़ को
3. मेरा समर्पित एकांत उत्सव
4. संशय की एक रात-1962 ई.
5. तुम मैरा मौन हो-1983
6. महा प्रस्थान
7. शबरी 8. प्रवाद पर्व
9. उत्सवा
10. अरण्या-1985
11. प्रार्थना-पुरुष-1985
12. समय देवता (प्रसिद्ध कविता)
13. चैत्या-1993

विशेष तथ्य –

1. इनके द्वारा रचित 'संशय की एक रात' (1962 ई.) नाट्य शैली में लिखी गयी एक लम्बी कविता है। इसमें राम के मन के संशय को चित्रित किया गया है।

समुद्र में पुल बंध जाने पर राम का मन संशय से भर जाता है। वे सोचते हैं कि एक सीता के लिए इतना बड़ा नरसंहार क्यों किया जाये? परन्तु सहयोगियों द्वारा यह कहे जाने पर कि यह युद्ध सीता के लिए नहीं अपितु प्रजा के लिए लड़ा जा रहा है तो वे युद्ध करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

2. 'प्रार्थना-पुरुष' इनके द्वारा रचित खण्डकाव्य है, जिसमें गाँधीजी के जीवन-चरित्र का वर्णन किया गया है।

3. इन्हें 'अरण्या' रचना के लिए 1988 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार व 1992 ई. में हिन्दी में सम्पूर्ण योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।

4. 'समय देवता' इनकी लम्बी एवं प्रसिद्ध कविता है, जो इनके 'मेरा समर्पित एकान्त उत्सव' में संकलित हैं।

unacademy

7. शमशेर बहादुर सिंह

⇒ जन्मकाल – 1911 ई.
⇔ मृत्युकाल – 1993 ई.
⇒ जन्मस्थान – देहरादून
⇔ प्रमुख रचनाएँ –
1. अमन का राग
2. चुका भी नहीं हूँ मैं
3. इतने पास अपने
4. काल तुझसे होड़ मेरी
5. उदिता-1980 ई. 6. बात बोलेगी हम नहीं-1987
7. टूटी हुई बिखरी हुई-1990 ई.

unacademy

⇒ विशेष तथ्य –

1. ये विचारों से माक्र्सवादी, संस्कारों से व्यक्तिवादी एवं अनुभवों से रूमानी नजर आते हैं।
2. हिन्दी साहित्य जगत् में इनको 'कवियों का कवि' भी कहा जाता है।
3. इनकी कविताओं का मुख्य स्वर 'कुंठित प्रेम' है।
4. इन्होंने 'कहानी' एवं 'नया साहित्य' नामक पत्रिकाओं का संपादन कार्य किया था।
5. इनकी 'अमन का राग' रचना प्रगतिवादी सरोकारों से संबंधित एक लम्बी कविता है।
6. 'उदिता' रचना की भूमिकाओं में वे प्रगतिवादी काव्य आन्दोलन की आवश्यकता महसूस करते हैं, किन्तु अपने वर्ग संस्कारों के कारण इससे जुड़ न सके।

नोट:- 'उदिता' रचना में दो भूमिकाएँ हैं।

7. इन्हें उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से 'मैथिलीशरण गुप्त' पुरस्कार तथा मध्य प्रदेश सरकार की ओर से 'कबीर सम्मान' प्रदान किया था।
8. 'चुका भी नहीं हूँ मैं' रचना के लिए इन्हें 1977 ई. में साहित्य पुरस्कार मिला।

unacademy

8. रघुवीर सहाय

⇒ जन्मकाल – 1929 ई.

⇔ मृत्युकाल – 1990 ई.

प्रमुख रचनाएँ –

•सीढ़ियों पर धूप में (प्रथम काव्य संग्रह)

•आत्महत्या के विरुद्ध – 1967 ई.

•लोग भूल गये हैं -1982 ई.

•मेरा प्रतिनिधि

•हँसो-हँसो, जल्दी हँसी

•कुछ पत्ते-कुछ चिट्ठियाँ-1989 ई.

unacademy

⇒ विशेष तथ्य –

1. 'लोग भूल गये हैं' रचना के लिए इनको 1984 ई. में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

2. 'सीढ़ियों पर धूप में' में एक अनाहत जिजीविषा, मध्यवर्गीय जीवन का दवाब, और लोकतंत्र की विडंबनाएँ चित्रित है।

3. 'हँसो-हँसो जल्दी हँसो' में आपातकाल से संबंधित कविताओं का संग्रह किया गया है। रघुवीर सहाय के हर काव्य संग्रह के प्रारंभ में 'भूमिका' लिखी गयी है, परन्तु इस काव्य के प्रारम्भ में कोई भूमिका नहीं है। इसके कवि मौन है, बोलने की मनाही है।

unacademy

9. भारत भूषण अग्रवाल

⇒ जन्मकाल – 1919 ई.

प्रमुख रचनाएँ –

- छवि के बंधन
- जागते रहो
- मुक्ति मार्ग
- ओ अप्रस्तुत मन
- कागज के फूल
- एक उठा हुआ हाथ – 1970 ई.
- उतना वह सूरज है
- अग्नि लीक

unacademy

विशेष तथ्य –

1. इनकी 'छवि के बंधन' रचना में सौन्दर्य, प्रेम एवं विरह की अनुभूतियों के साथ-साथ निराशा, पीडा, पराजय तथा दर्द की भी अभिव्यक्ति हुई है।
2. इनके द्वारा रचित निम्न गीतों 'लालसेना का गीत', 'लाल जवानों का पानी', 'लाल निशान' आदि में माक्र्सवादी स्वर प्रस्फुटित हुआ है।
3. 'उतना वह सूरज है' रचना के लिए इन्हें 1978 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था।

unacademy

10. शकुंतला माथुर

⇒ जन्मकाल – 1922 ई.

प्रमुख रचनाएँ –

- अभी और कुछ इनका
- चाँदनी और चूनर
- दोपहरी